सम्मेलन के मुख्य आकर्षण / केन्द्र बिन्दु

- बीज वक्तव्य
- आमन्त्रित वक्तव्य
- आलेख/शोधपत्र वाचन
- विशेषज्ञ परिचर्चा
- सर्वश्रेष्ठ आलेख पुरस्कार (प्रथम व द्वितीय)
- सांस्कृतिक कार्यक्रम
- आलेख प्रकाशन (सम्पादित पुस्तक में)

सारांश भेजने हेतु

सारांश भेजने के इच्छुक विद्यार्थी, शोधार्थी, प्राध्यापक एवं अन्य विद्वतजन सुझाए गए उपविषयों पर या मुख्य विषय से संबंधित किसी अन्य विषय पर अपना स्वरचित व मौलिक सारांश (200–250 शब्दों में) कृपया इस मेल पर प्रेषित करें– **gjmirsconference2025@gmail.com** सारांश केवल हिन्दी या अंग्रेजी में ही भेजें।

कृपया सारांश में अपना नाम, पद, संस्था का नाम और फोन नम्बर व ई–मेल अवश्य अंकित करें।

समयावधि

सारांश भेजने की अंतिम तिथि : 03 सितंबर, 2025

अग्रिम पंजीकरण की अंतिम तिथि : 04 सितंबर, 2025

नोट :

1. केवल स्वीकृत सारांश पर आधारित शोधपत्र/आलेख के प्रस्तुतिकरण की अनुमति होगी, जिसकी सूचना संबधित को सारांश भेजने के तीन दिन के भीतर दे दी जाएगी।
2. सम्मेलन में ऑनलाईन शोधपत्र/आलेख प्रस्तुति का विकल्प भी होगा।
3. चयनित आलेख/शोध–पत्र संपादित पुस्तक में प्रकाशित किये जायेंगे।
4. गुरु जम्भेश्वर जी से सम्बन्धित साहित्य प्राप्त करने के लिए गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान, जीजेयू, हिसार अथवा सम्मेलन संयोजक व आयोजन सचिव से सम्पर्क करें।

पंजीकरण

सभी प्रतिभागियों से अनुरोध है कि वे अन्तिम तिथि से पहले अपना पंजीकरण शुल्क और आवासीय शुल्क (यदि आवश्यक हो तो) UPI/Online Bank Transfer के माध्यम से निर्धारित बैंक खाते में जमा करें, और फिर दिए गए गूगल फॉर्म पर स्वयं को पंजीकृत अवश्य करें। कृपया भुगतान का स्क्रीन शॉट / ई–स्लिप गूगल फॉर्म पर अपलोड करें। पंजीकरण के लिए **गूगल फॉर्म लिंक** https://forms.gle/qXFxhSx7sGjAeps7A का उपयोग करें।

पंजीकरण शुल्क

क्रमांक	वर्ग (कैटेगरी)	पंजीकरण शुल्क (अग्रिम)	पंजीकरण शुल्क (तत्काल)	आवासीय शुल्क (पंजीकरण शुल्क के अतिरिक्त)
1.	शोधार्थी एवं विद्यार्थी	₹ 1000	₹ 1500	₹ 1000 प्रतिदिन (On sharing basis)
2.	प्राध्यापक एवं प्रतिनिधि	₹ 1500	₹ 2000	
3.	विदेशी प्रतिनिधि	US $100	US $150	US $ 50 प्रतिदिन

बैंक विवरण

Bank Name	Account Holder	Account No.	IFSC
Punjab National Bank	**REGISTRAR GJU**	**4674000100036542**	**PUNB0467400**

सम्मेलन स्थल

सीआरएस ऑडिटोरियम

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार

सम्मेलन संरक्षक

प्रो. नरसी राम बिश्नोई
कुलपति
गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार

सम्मेलन संयोजक

प्रो. किशनाराम बिश्नोई
विभागाध्यक्ष
गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान

सम्मेलन निदेशक

प्रो. नरेन्द्र कुमार बिश्नोई
अधिष्ठाता
धार्मिक अध्ययन संकाय

आयोजन सचिव

डॉ. रामस्वरूप
गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान

सलाहकार समिति

प्रो. योगेश सिंह, कुलपति, दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
प्रो. टंकेश्वर कुमार, कुलपति, हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेन्द्रगढ़
प्रो. हरमोहिन्द्र सिंह बेदी, कुलाधिपति, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला
प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री, उपाध्यक्ष, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला
प्रो. मुरली मनोहर पाठक, कुलपति, श्री लालबहादुर राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
प्रो. दिनेश चन्द्र शास्त्री, कुलपति, संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, उतराखण्ड
प्रो. मोहन, कुलपति, श्री वेंकटेश्वर विश्वविद्यालय, सिक्किम
प्रो. एन. के. पांडेय, कुलपति, हरिदेव जोशी पत्रकारिता विश्वविद्यालय,जयपुर
श्री एस.ए.आर.पी.वी. चतुर्वेदी स्वामी, श्री रामानुजा मिशन ट्रस्ट, चेन्नई
प्रो. कृष्ण कुमार कौशिक, जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली
प्रो. गलीना साकोलोवा, सोफिया विश्वविद्यालय, सोफिया, बुल्गारिया
प्रो. देवेन्द्र कुमार सिंह गौतम, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर
डॉ. दलपत सिंह राजपुरोहित, एशियाई अध्ययन विभाग, टेक्सास विश्वविद्यालय, ऑस्टिन, अमेरिका

आयोजन समिति

डॉ. विजय कुमार, कुलसचिव
प्रो. विनोद कुमार छौकर, प्रशासनिक सलाहकार कुलपति
प्रो. संदीप सिंह राणा, तकनीकी सलाहकार कुलपति
प्रो. योगेश छाबा, अधिष्ठाता, अकादमिक मामले
प्रो. मनोज दयाल, अधिष्ठाता, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान
प्रो. आशा गुप्ता, अधिष्ठाता, पर्यावरण और जीव विज्ञान
प्रो. वंदना पूनिया, अधिष्ठाता, शिक्षा
प्रो. संजीव कुमार, अधिष्ठाता, कॉलेज
प्रो. अनिल कुमार, अधिष्ठाता, छात्र कल्याण
प्रो. विनोद कुमार बिश्नोई, निदेशक, हरियाणा बिजनेस स्कूल
प्रो. सुनीता रानी, निदेशक, मदन मोहन मालवीय शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र
प्रो. धर्मेन्द्र कुमार, अध्यक्ष, ए.आई और डाटा विज्ञान विभाग
प्रो. राकेश कुमार बहमनी, मनोविज्ञान विभाग
डॉ. अश्विनी कुमार बिश्नोई, विभागाध्यक्ष, अर्थशास्त्र
डॉ. विनोद कुमार, पुस्तकालयाध्यक्ष

सम्पर्क सूत्र

सम्मेलन कार्यालय : 01662–263159 | **E-mail : gjmirsconference2025@gmail.com**

पंजीकरण सम्बन्धी
डॉ. रामस्वरूप : + 91 9782005752
डॉ. गीतू धवन : + 91 9215537097
डॉ. पुष्पा बिश्नोई + 91 7015958317
कोमल : + 91 7988944142
राकेश कुमार : + 91 6350022837

आवास और परिवहन सम्बन्धी
प्रो. राकेश कुमार बहमनी : + 91 9896271775

अतिरिक्त जानकारी हेतु
प्रो. किशनाराम बिश्नोई
+ 91 9416422416
डॉ. रामस्वरूप
+ 91 9782005752

कृपया सम्मेलन से संबंधित सभी अपडेट के लिए सम्मेलन की वेबवाइट देखें।

सम्मेलन वेबसाइट : https://www.gjust.ac.in/conference/gjmirs2025

अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन

(Hybrid Mode)

गुरु जम्भेश्वर जी महाराज के पर्यावरण चिंतन में सतत् विकास की अवधारणा

08–09 सितंबर, 2025

आयोजक

गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान
गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,
हिसार–125001, हरियाणा (भारत)

(NAAC द्वारा A+ श्रेणी प्रदत्त विश्वविद्यालय, हरियाणा राज्य विधानमंडल अधिनियम 17 के तहत सन् 1995 में स्थापित)

अन्तरराष्ट्रीय सम्मेलन के विषय में

भारतवर्ष की सांस्कृतिक चेतना में प्रकृति के प्रति श्रद्धा, समर्पण और संरक्षण की भावना सदैव से अंतर्निहित रही है। यहाँ की आध्यात्मिक परंपराएँ सृष्टि के प्रत्येक अंश में दिव्यता का अनुभव कराती है। इसी परंपरा को जीवंत रूप में अभिव्यक्त किया संत परंपरा के एक दिव्य आलोक गुरु जम्भेश्वर जी ने, जिनके पर्यावरण चिंतन ने न केवल समाज को प्राकृतिक संसाधनों की मर्यादा का बोध कराया, बल्कि सतत् विकास की अवधारणा को सदियों पहले साकार किया।

गुरु जम्भेश्वर जी जिन्हें जाम्भोजी के नाम से भी जाना जाता है। 15वीं शताब्दी में थार के मरुस्थलीय क्षेत्र में अवतरित हुए। उन्होंने बिश्नोई पंथ की स्थापना करते हुए 29 नियमों की स्थापना की, जिनमें से अनेक नियम प्रकृति संरक्षण, वन्यजीवों की रक्षा, जल-संवर्धन, स्वच्छता और जैविक जीवनशैली से सम्बंधित है। यह एक अद्वितीय उदाहरण है, जहाँ किसी धर्म, पंथ या संप्रदाय का आधार ही पर्यावरण संरक्षण हो।

गुरु जम्भेश्वर जी का दृष्टिकोण केवल उपदेशों तक सीमित नहीं था, बल्कि उन्होंने जीवन के व्यावहारिक पक्ष में प्रकृति से सह-अस्तित्व को आत्मसात करने पर बल दिया। उनके संदेशों में 'जीव दया पालणी, रूंख लीलो न घावे' जैसे सूत्र आज भी प्रासंगिक है, जहाँ वृक्षों को जीव के समान संरक्षण प्रदान करने की शिक्षा दी गई है। यह दृष्टिकोण आज के वैश्विक जलवायु संकट और जैव विविधता के ह्रास की समस्याओं के समाधान की आधार बन सकता है।

भारत की पारंपरिक ज्ञान परंपराओं में 'सतत् विकास' की अवधारणा केवल आर्थिक या तकनीकी नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक चेतना से जुड़ी रही है। गुरु जम्भेश्वर जी के विचार इसी चेतना की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति है, जहाँ प्रकृति और मानव के मध्य संतुलन को जीवन का मूल सूत्र माना गया है।

यह अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन न केवल गुरु जम्भेश्वर जी के पर्यावरण चेतना को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने का माध्यम बनेगा, बल्कि यह भारतीय संस्कृति की उस धरोहर को पुनः रेखांकित करेगा, जिसमें प्रकृति के साथ तादात्म्य ही उन्नति का मार्ग है, जहाँ प्रकृति और मानव का सह-अस्तित्व ही विकास का मूल मंत्र है। आज जब पृथ्वी प्राकृतिक संसाधनों के असंतुलित दोहन, प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी गंभीर चुनौतियों से जूझ रही है, ऐसी परिस्थिति में गुरु जम्भेश्वर जी का पर्यावरण चिंतन वैश्विक समाज के लिए न केवल एक धार्मिक प्रेरणा, बल्कि एक व्यावहारिक पथप्रदर्शक बनकर मानवता को संतुलन और सहअस्तित्व की राह दिखा सकता है जो संतुलन, सहभाव और शांति का पथ प्रशस्त करेगा।

सम्मेलन के उद्देश्य

- **गुरु जम्भेश्वर जी की पर्यावरण शिक्षाओं का विश्लेषण**
  उनके सिद्धांतों और शिक्षाओं में निहित पर्यावरण संरक्षण और जैविक संतुलन की भावना को समझना और वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उसका महत्व स्पष्ट करना।
- **भारतीय संस्कृति में पर्यावरण चेतना की परंपरा को उजागर करना**
  वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों और लोक परंपराओं में विद्यमान सतत् विकास के विचारों की व्याख्या करना।
- **स्थानीय और वैश्विक संदर्भ में सतत् विकास के लिए भारतीय दृष्टिकोण प्रस्तुत करना**
  आधुनिक वैश्विक पर्यावरण संकटों के समाधान हेतु भारतीय जीवन दर्शन, विशेषकर जाम्भाणी परंपरा की प्रासंगिकता को रेखांकित करना।
- **नीतिगत निर्माण में पारंपरिक ज्ञान के समावेश पर विमर्श**
  पर्यावरण संरक्षण हेतु नीति निर्माण में गुरु जम्भेश्वर जी जैसे संतों की शिक्षाओं को शामिल करने के उपायों पर विचार-विमर्श करना।
- **युवा पीढ़ी में पर्यावरण चेतना जागृत करना**
  सम्मेलन के माध्यम से विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं शिक्षकों को भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के अनुरूप पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व की भावना विकसित करने हेतु प्रेरित करना।

गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान के विषय में

गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान की स्थापना 1995 में गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के प्रादुर्भाव के साथ ही हुई। संस्थान का उद्देश्य जम्भवाणी एवं जाम्भाणी साहित्य के साथ-साथ विभिन्न धर्मों एवं दर्शनों का तुलनात्मक अध्ययन एवं अनुसंधान करना है जिसमें प्रमुख रूप से सनातन (हिन्दू), बौद्ध, जैन, सिक्ख, इस्लाम व ईसाई धर्म एवं संत साहित्य प्रमुख हैं। इसके साथ ही भारतीय दार्शनिक मतों का अध्ययन एवं अनुसंधान करना तथा भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं इतिहास पर शोध कार्य करना भी संस्थान का प्रमुख लक्ष्य है। संस्थान द्वारा विश्व के सभी धर्मों का पर्यावरण की दृष्टि से अध्ययन किया जा रहा है। इसके साथ-साथ संस्थान श्रीमद् भगवत गीता व गुरु जम्भेश्वर जी की आध्यामिक शिक्षाओं में पर्यावरण व स्वास्थ्य में डिप्लोमा, संस्कृत में स्नातकोत्तर और तुलनात्मक धर्म-दर्शन एवं जाम्भाणी साहित्य पर विद्यावाचस्पति (पीएच.डी.) डिग्री भी प्रदान करता है।

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार के बारे में

15वीं शताब्दी की महान् विभूति एवं पर्यावरणविद् गुरु जम्भेश्वर जी महाराज के नाम पर स्थापित यह विश्वविद्यालय प्रौद्योगिकी, फार्मेसी, पर्यावरण विज्ञान, गैर-पारम्परिक ऊर्जा स्त्रोत, जनसंचार, इंजीनियरिंग, प्रबंधन, मानविकी, समाज विज्ञान और धार्मिक अध्ययन आदि क्षेत्रों में शिक्षा एवं शोध प्रदान कर रहा है। इसकी स्थापना 20 अक्टूबर, 1995 को हरियाणा राज्य के विधानमंडल के एक अधिनियम द्वारा उच्च शिक्षा के उभरते क्षेत्रों में अध्ययन और अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए की गई। गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय लगभग 372 एकड़ के विशाल हरित क्षेत्र में फैला हुआ यह विश्वविद्यालय NAAC से A+ ग्रेड मान्यता प्राप्त है।

इस विश्वविद्यालय को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित टाइम्स हायर एजुकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2025 में 501-1000 बैंड में स्थान मिला है। इंजीनियरिंग विषय श्रेणी में इस विश्वविद्यालय को भारत में 88वां स्थान और विश्व स्तर पर 1001-1250 रैंक प्राप्त हुई है। इसके अलावा विश्वविद्यालय ने टाइम्स हायर एजुकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2025 में भारत में 59वां और विश्व में 1201-1500 रैंक हासिल की है। एशिया यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2025 में भारत में 69वां स्थान और एशिया में 501-600 रैंक के साथ हरियाणा राज्य का एकमात्र राज्य सरकार द्वारा संचालित विश्वविद्यालय है, जिसने एशिया यूनिवर्सिटी रैंकिंग और टाइम्स हायर एजुकेशन वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2025 में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है।

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा 2024 के इंडिया रैंकिंग्स (NIRF) में राज्य सार्वजनिक विश्वविद्यालय श्रेणी में 47वां स्थान, फार्मेसी श्रेणी में 55वां स्थान, विश्वविद्यालय श्रेणी में 101-150 रैंक बैंड, प्रबंधन श्रेणी में 101-125 रैंक बैंड हासिल किया है। टाइम्स हायर एजुकेशन यंग यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2024 में भारत में 41वां स्थान और विश्व स्तर पर 401-500 रैंक UI ग्रीनमैट्रिक वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2024 (हरित परिसर और पर्यावरणीय स्थिरता पर आधारित) में भारत में 22वां स्थान और विश्व में 639वीं रैंक इस विश्वविद्यालय को प्राप्त हुई है। विश्वविद्यालय का वर्तमान स्कोपस एच-इंडेक्स 134 है, जो हरियाणा राज्य के किसी भी विश्वविद्यालय का उच्चतम एच-इंडेक्स है। शोधकर्ताओं द्वारा प्रतिष्ठित समीक्षा पत्रिकाओं में कुल 5414 शोध पत्र प्रकाशित किए गए हैं, जो 117427 से अधिक उद्धरणों के साथ स्कोपस में सूचीबद्ध है। विश्वविद्यालय का औसत पेपर उद्धरण 21.68 है, जो इस क्षेत्र में सबसे अधिक है। वर्तमान में विश्वविद्यालय 28 शिक्षण विभागों के साथ कैम्पस, ओडीएल एवं ऑनलाइन इत्यादि माध्यमों से 150 से अधिक यूजी, पीजी एवं पीएचडी कार्यक्रम प्रदान कर रहा है।

उप-विषय

भारतीय संस्कृति और पर्यावरण चेतना का पारंपरिक आधार

- भारतीय संस्कृति में धर्म और पर्यावरण का महत्व
- सनातन संस्कृति में प्रकृति संरक्षण के विभिन्न सरोकार
- पर्यावरण के सामाजिक एवं सांस्कृतिक सरोकारों का महत्व
- भारतीय ज्ञान परम्परा में पर्यावरण संरक्षण एवं संवर्धन
- प्राचीन भारतीय ग्रंथों में सतत् विकास की अवधारणा
- धर्म, अध्यात्म और पर्यावरणीय चेतना का सामंजस्य
- ग्रामीण पारिस्थितिकी और भारतीय गांवों की जीवनशैली

गुरु जम्भेश्वर जी और जाम्भाणी दर्शन : एक पर्यावरण विचारधारा

- पर्यावरण संरक्षण की भारतीय परम्परा और जाम्भाणी दर्शन
- पर्यावरण चिंतन परम्परा में गुरु जंभेश्वर जी का योगदान
- गुरु जंभेश्वर के सिद्धांत और खेजड़ी वृक्ष का सांस्कृतिक महत्व
- गुरु जम्भेश्वर के 29 नियमों में निहित वन्य जीवन रक्षा के सिद्धांत
- गुरु जम्भेश्वर का पर्यावरण दृष्टिकोण और आधुनिक SDG
- गुरु जंभेश्वर और पर्यावरण चेतना : 21वीं सदी की स्थायी जीवन शैली की ओर
- गुरु जंभेश्वर और पर्यावरण संतुलन : एक सांस्कृतिक-वैज्ञानिक अनुशीलन

पर्यावरण चिंतन में मनोविज्ञान, प्रबंधन एवं जनसंचार की अवधारणा

- पर्यावरण चेतना एवं व्यवहार परिवर्तन : जंभेश्वर जी की शिक्षाओं की मनोवैज्ञानिक प्रासंगिकता।
- सतत जीवन-शैली एवं पारिस्थितिकीय चिंता : व्यक्तित्व, मूल्य एवं मानसिक स्वास्थ्य के संदर्भ में।
- सतत् विकास हेतु नेतृत्व एवं संगठनात्मक उत्तरदायित्व : जंभेश्वर जी के विचारों से प्रबंधन की प्रेरणा।
- ग्रीन मैनेजमेंट, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं नैतिक प्रबंधन : जांभाणी दर्शन के आलोक में।
- पर्यावरणीय संवेदनशीलता के प्रसार में मीडिया की भूमिका ।
- जंभेश्वर जी के संदेश और आधुनिक संचार माध्यम ।

गुरु जम्भेश्वर जी के अनुयायियों का पर्यावरण संरक्षण में योगदान

- खेजड़ली बलिदान : विश्व का पहला पर्यावरण जन आंदोलन – दार्शनिक एवं ऐतिहासिक अनुशीलन
- जाम्भाणी दर्शन द्वारा पारंपरिक वन संरक्षण विधियाँ – अनुभवजन्य अध्ययन
- गुरु जम्भेश्वर जी और भारत में पर्यावरण सक्रियता का आदर्श मॉडल
- बिश्नोई महिलाएं और पर्यावरण नेतृत्व : खेजड़ली से वर्तमान तक
- मरुस्थलीय क्षेत्रों में बिश्नोई समुदाय की पारिस्थितिकीय भूमिका
- बिश्नोई पंथ और संयुक्त राष्ट्र के सतत् विकास लक्ष्यों (SDG) के बीच साम्य
- जाम्भाणी संस्कृति में पशु-पक्षियों के प्रति दया भाव का समाजशास्त्रीय एवं दार्शनिक अध्ययन

भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की आधुनिक प्रासंगिकता और वैश्विक संदर्भ

- योग, ध्यान और पर्यावरण संतुलन
- वैश्वीकरण बनाम पारंपरिक सांस्कृतिक स्थायित्व
- प्लास्टिक मुक्त समाज की दिशा में जाम्भाणी दृष्टिकोण
- हरित जीवन शैली की पुनर्व्याख्या : गुरु जंभेश्वर जी के विशेष संदर्भ में
- आधुनिक प्रकृति संरक्षण तकनीकी